समास

दो या दो से अधिक पदों के योग से बने शब्द को समास कहते हैं। समास छः प्रकार के होते हैं

(1) अव्ययीभाव समास-जिस समास में प्रथम पद अव्यय हो तथा वह पद ही प्रधान हो, वहाँ अव्ययीभाव समास होता है।

जैसे-

प्रतिदिन–प्रत्येक दिन,

यथाशक्ति-शक्ति के अनुसार,

आजीवन-जीवनपर्यन्त या जीवनभर।

(2) तत्पुरुष समास-जिस समास में उत्तर पद प्रधान होता है तथा पूर्व पद के कारक (विभक्ति) का लोप करके दोनों पदों को मिला दिया जाता है, वहाँ तत्पुरुष समास होता है।

जैसे- मन्त्रीपुत्र-मन्त्री का पुत्र,

समुद्रयात्रा-समुद्र की यात्रा,

विद्यालय-विद्या का आलय,

व्यायामशाला-व्यायाम की शाला,

पर्वतमाला-पर्वतों की माला,

दुर्गपति-दुर्ग का पति।

विभक्तियों के भेद के आधार पर इसके कर्म तत्पुरुष, करण तत्पुरुष, सम्प्रदान तत्पुरुष, अपादान तत्पुरुष, सम्बन्ध तत्पुरुष तथा अधिकरण तत्पुरुष छः प्रकार के होते हैं।

(3) कर्मधारय समास-विशेषण और विशेष्य अथवा उपमान और उपमेय के मिलने पर कर्मधारय समास होता है।

जैसे-

श्वेताम्बर-श्वेत है जो अम्बर,

मधुरस-मधुर रस,

घनश्याम-घन के समान श्याम।

(4) द्वन्द्व समास-इस समास में दोनों पद प्रधान होते हैं, परन्तु उसके संयोजक शब्द 'और' का लोप रहता है।

जैसे-

आदान-प्रदान-आदान और प्रदान,

भाई-बहिन-भाई और बहिन,

राम-कृष्ण-राम और कृष्ण,

शत्रु-मित्र-शत्रु और मित्र,

पिता-पुत्र-पिता और पुत्र।

(5) द्विगु समास-जिस समास में पूर्व पद- संख्यावाचक हो वह द्विगु समास कहलाता है।

जैसे-

सप्तद्वीप-सात द्वीपों का समूह,

त्रिभुवन-तीन भुवनों का समूह,

अष्टकोण-आठ कोण,

षडानन—षट् मुख।

(6) बहुब्रीहि समास-जिस समास में पूर्व एवं उत्तर पद के अतिरिक्त कोई अन्य पद प्रधान होता है, उसे बहुब्रीहि समास कहते हैं।

जैसे-

पंचानन—पाँच मुख वाला = शिव,

लम्बोदर-लम्बा है उदर जिसका = गणेश।

विग्रह सहित समास के कुछ उदाहरण-

सामासिक पद	**विग्रह**	**समास का नाम**
वंशधर	वंश को धारण करने वाला	कर्म तत्पुरुष
कलनाद	कल-कल का नाद	कर्मधारय
अभावग्रस्त	अभाव से ग्रस्त	तत्पुरुष
महामानव	महान् है जो मानव	कर्मधारय
महाराजा	महान है जो राजा	कर्मधारय
उपनगर	नगर के समीप	अव्ययीभाव
महाशय	महान है आशय जिसका वह	बहुव्रीहि
यथानियम	नियम के अनुसार	अव्ययीभाव
जलराशि	जल की राशि	सम्बन्ध तत्पुरुष
भयभीत	भय से भीत	करण तत्पुरुष
प्राणपक्षी	प्राणरूपी पक्षी	कर्मधारय
रंगशाला	रंग की शाला	सम्बन्ध तत्पुरुष
जलाप्लावन	जल का प्लावन	सम्बन्ध तत्परुष
कण्टक शयन	काँटों पर शयन	अधिकरण तत्पुरुष
दीनदयाल	दीनों पर दयालु	अधिकरण तत्पुरुष
स्नेहपालिता	स्नेह से पली हुई	करण तत्पुरुष

लाभ-हानि	लाभ और हानि	द्वन्द्व
माता-पिता	माता और पिता	द्वन्द्व
हास-परिहास	हास और परिहास	द्वन्द्व
जीवन-मरण	जीवन और मरण	द्वन्द्व
देवार्चन	देव का अर्चन	सम्बन्ध तत्पुरुष
दृष्टिपात	दृष्टि का पात	सम्बन्ध तत्पुरुष
श्रेय-प्रेय	श्रेय और प्रेय	द्वन्द्व
पंचामृत	पाँच अमृतों का समूह	द्विगु
विश्रामगृह	विश्राम के लिए गृह	सम्प्रदान तत्पुरुष
काला-पीला	काला और पीला	द्वन्द्व
चतुरानन	चार मुख वाला (ब्रह्मा)	बहुब्रीहि
दुर्गपति	दुर्ग का पति	षष्ठी तत्पुरुष
तीर्थराज	तीर्थों का राजा (प्रयाग)	बहुब्रीहि
चतुर्भुज	चार भुजाओं वाला (विष्णु)	बहुब्रीहि
पंचवटी	पाँच वटों का समूह	द्विगु
त्रिलोक	तीनों लोकों का समूह	द्विगु
नीलाकाश	नीला आकाश	कर्मधारय
गगनचुम्बी	गगन चूमने वाला	कर्मधारय
मन-मयूर	मन रूपी मयूर	कर्मधारय
राजभवन	राजा का भवन	षष्ठी तत्पुरुष
भरपेट	पेट भरके	अव्ययी भाव
माखनचोर	माखन का चोर	षष्ठी तत्पुरुष
प्रतिदिन .	प्रत्येक दिन	अव्ययीभाव

लम्बोदर	लम्बा है उदर जिसका (गणेश)	बहुब्रीहि
देशभक्ति	देश के लिए भक्ति	सम्प्रदान तत्पुरुष